[२४] श्री चतुःशरणं (प्रकीर्णक)सूत्रम्

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

"चतु:शरण" मूलं एवं छाया

[मूलं एवं संस्कृतछाया]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी मः साः]

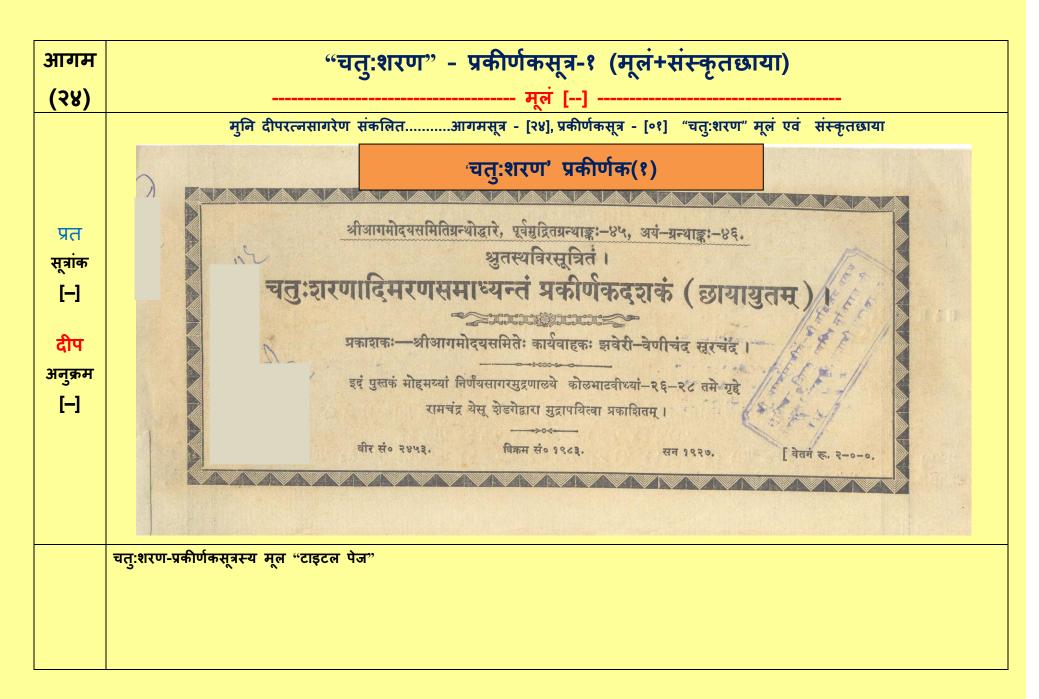
(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.)

15/01/2015, गुरुवार, २०७१ पौष कृष्ण १०

jain_e_library's Net Publications

मुनि दीपरत्जसागरेण संकलित.....आगमसूत्र-[२४], प्रकीर्णकसूत्र-[१] "चतुःशरण" मूर्च एवं संस्कृतछाया



मूल	मूलाङ्का: ६३ 'चतु:शरण' प्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रम दीप-अनुक्रमा: ६३						ξ ξ 3	
मूलांक:	गाथा	पृष्ठांक:	मूलांक:	गाथा	पृष्ठांक:	मूलांक:	गाथा	पृष्ठांक:
००१	आवश्यक-अर्थाधिकार:	oog	٥٠٠	मंगल-आदि	००५	०१०	चतु:शरणम्	००५
०४९	दुष्कृत् गर्हा	०१०	૦ૡૡ	सुकृत् अनुमोदना	०११	०५९	उपसंहार:	०१२

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित......आगमसूत्र - [२४], प्रकीर्णकसूत्र - [१] "चतुःशरण" मूलं एवं संस्कृतछाया

['चतुःशरण' - मूलं एवं संस्कृतछाया] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

यह प्रत सबसे पहले "चतुःशरणादिमरणसमाध्यन्तं प्रकीर्णकदशकं" नामसे सन १९२७ (विक्रम संवत १९८३) में आगमोदय समिति द्वारा प्रकाशित ह्ई, संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब | इस प्रतमे १० प्रकीर्णक थे.

इसी प्रत को फिर से दुसरे पूज्यश्रीओने अपने-अपने नामसे भी छपवाई, जिसमे उन्होंने खुदने तो कुछ नहीं किया, मगर इसी प्रत को ऑफसेट करवा के, अपना एवं अपनी प्रकाशन संस्था का नाम छाप दिया. जिसमे किसीने पूज्यपाद् सागरानंदसूरिजी के नाम को आगे रखा, और अपनी वफादारी दिखाई, तो किसीने स्वयं को ही इस पुरे कार्य का कर्ता बता दिया और संपादकपूज्यश्री तथा प्रकाशक का नाम ही मिटा दिया |

♣ हमारा ये प्रयास क्यों? ♣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है किन्तु लोगों की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसमें बीचमें पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमें आगम का नाम, फिर मूलसूत्र या गाथा के क्रमांक लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा सूत्र या गाथा चल रहे है उसका सरलता से ज्ञान हो शके, बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है, उसके साथ वहाँ 'दीप अनुक्रम' भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है या फिर गाथा शब्द लिख दिया है |

हमने एक अनुक्रमणिका भी बनायी है, जिसमे प्रत्येक अध्ययन आदि लिख दिये है और साथमें इस सम्पादन के पृष्ठांक भी दे दिए है, जिससे अभ्यासक व्यक्ति अपने चिहते अध्ययन या विषय तक आसानी से पहुँच शकता है | अनेक पृष्ठ के नीचे विशिष्ठ फूटनोट भी लिखी है, जहां उस पृष्ठ पर चल रहे ख़ास विषयवस्तु की, मूल प्रतमें रही हुई कोई-कोई मुद्रण-भूल की या क्रमांकन-भूल सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है |

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसि को मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है|मुनि दीपरत्नसागर.....

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.......आगमसूत्र - [२४], प्रकीर्णक सूत्र - [१] "चतु:शरण" मूलं एवं संस्कृतछाया

प्त स्त्रांक ॥१॥ सावज्ञजोगविरई १ उक्कित्तण २ गुणवओ अ पहिवत्ती ३ । खिलअस्स निंदणा ४ वणितिगच्छ ५ गुणवारणा चेव ६ ॥१॥ चारित्तस्स विसोही कीरह सामाइएण किल इहुएं। सावज्ञेअरजोगाण वज्जणासेवणत्तणओ ॥ २॥ दंसणपारिवसीही चउवीसायत्थएण किल इहुएं। सावज्ञेअरजोगाण वज्जणासेवणत्तणओ ॥ २॥ दंसणपारिवसीही चउवीसायत्थएण किल इहुएं। सावज्ञेअरजोगाण वज्जणासेवणत्तणओ ॥ २॥ व्रंसणपारिवसीही चउवीसायत्थएण किल इहुएं। सावज्ञेअरजोगाण वज्जणासेवणत्तणओ ॥ २॥ व्रंसणपारिवसीही चउवीसायत्थएण किल इहुएं। सावज्ञेअरजोगाण वज्जणासेवणत्तणओ ॥ २॥ व्रंसणपारिवसीही चउवीसायत्थएण किल इहुएं। सावज्ञेअरजोगाण वज्जणासेवणत्त्रण ॥ ३॥ नाणाईआ उ गुणा तस्संपन्नपडिवस्तिकरणाओ। वंदणएणं विहिणा कीरह सोही उ तेसिं तु ॥ ४॥ खिलअस्स य तेसि गुणो
पत सूत्रांक ॥१॥ दीप अनुक्रम उग्रुप्त स्वार्णकार्य प्रकृष्णिकद्शक—चउस्रण्ण्य । सावज्रजोगविरई १ उिक्रसण २ गुणवओ अ पिडवर्सा ३। खिलअस्स निंदणा ४ वणितिगिच्छ ५ गुणवारणा पेव ६ ॥१॥ चारित्तस्स विसोही कीरइ सामाइएण किल इह्यं। सावज्रेअरजोगाण वज्रणासेवणत्तणओ ॥ २॥ दंसणयारिवसोही चउवीसायत्थएण किचइ य। अच्छ्यअगुणिकत्तणस्वेण जिणविर्दाणं॥ ३॥ नाणाईआ उ गुणा तस्संपन्नपिडवित्तकरणाओ। वंदण्णणं विहिणा कीरइ सोही उ तेसिं तु॥४॥ खिलअस्स य तेसि पुणो
सावचयोगविरतिः १ उर्वहीर्तनं २ गुणवतश्च प्रतिपैतिः ३ । स्वितितस्य निन्दनं ४ त्रणविकित्सा ५ गुणधारणं ६ ³चैव ॥ १ ॥ चारि- त्रस्य विग्रुद्धिः क्रियते सामायिकेन किछेह् । सावचेतरयोगानां वर्जनाऽऽसेवनतः ॥ २ ॥ दर्शनाचारविग्रुद्धिश्चतुर्विद्यसात्मस्तवेन कियते च । अत्यद्भुतगुणकीर्त्तनरूपेण जिनवरेन्द्राणाम् ॥ ३ ॥ ज्ञानादिका एव गुण्णास्तरसंपत्रप्रतिपत्तिकरणान् । वन्दनकेन विधिना क्रियते ग्रुद्धि- भ स्तृतिः (लोकस्योचोतकरः) । २ वन्दनम् । ३ पद्धावश्यकार्याधिकाराः । For Personal & Private Use Only अथ षड् आवश्यकस्य व्याख्या लिख्यते

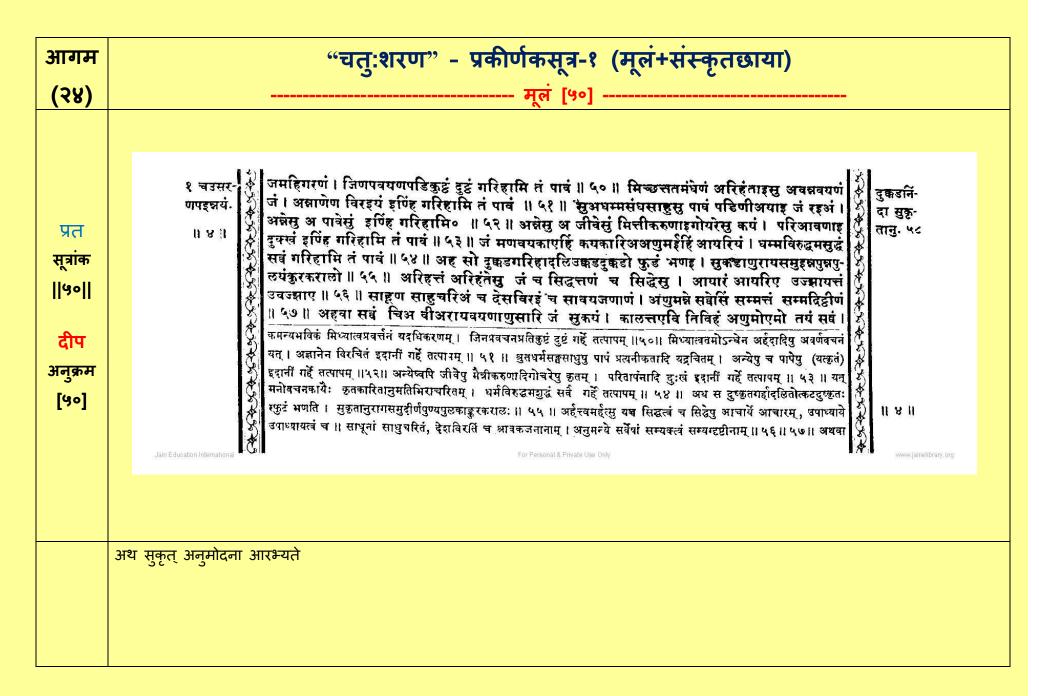
आगम	"चतुःशरण" – प्रकीर्णकसूत्र-१ (मूलं+संस्कृतछाया)
(58)	मूलं [७] मूलं ।
प्रत स्त्रांक 9 दीप अनुक्रम [9]	मूल [9] मृनि दीपरत्नसागरेण संकलितआगमसूत्र - [२४], प्रकीर्णकसूत्र - [०१] "चतुःशरण" मूलं एवं संस्कृतछाया १ चउसर- णपर्षयं. ॥१॥ विहिणा जं निंदणाइ पडिकमणं । तेण पडिक्रमणोणं तेसिंपि अ कीरए सोही ॥५॥ चरणाईयारा(हयाइया]णं जहक्रममं वणितिगिच्छस्वेणं । पडिक्रमणासुद्धाणं सोही तह काउसगणे ॥ १ ॥ सुणधारणरूवेणं पक्ष्याता । उपो- हेणा तवहआरस्स । विरिआयगारस्स पुणो सव्विहिति कीरए सोही ॥९॥ गय १ वसह २ सीह ३ अभिसेअ ४ हाँ १४ च ॥८॥ अमिर्दनिद्देविं अंविदं महावीरं । कुसालाणुवंधि बंधुरमञ्ज्ञायणं किसहस्सामि ॥९॥ चउसरणगमण १ दुक्कहागिहा २ सुकडाणुमोअणा ३ चेव। एम गणो अणवर्ग कायव्यो कुसलहेजित्ता ॥१०॥ अरिहंत सिद्ध साह केविलकहिओ सुहावही घम्मो । एए चउरो चउग्रइरणा सरणं लहह घको ॥११॥ अलह देव तेषां तु ॥ ४ ॥ स्वलितत्य व तेषां पुनाविधिना यन निन्दनादि प्रतिक्रमणम् । तेन प्रतिक्रमणेन तेषामिप च किवते हुद्धिः ॥ ५॥ चंरणाविधायणां यथाक्रमं अणविकित्सास्तरण । प्रतिक्रमणहुद्धानां हुद्धिमायम् । तेन प्रतिक्रमणेन तेषामिप च किवते हुद्धिः ॥ ५॥ चंरणाविधायणां प्रयाक्ष मणविकित्सास्तरण । प्रतिक्रमणहुद्धानां हुद्धिमायम् । तेन प्रतिक्रमणेन तेषामिप च किवते हुद्धिः ॥ ५॥ चंरणाविधायणां प्रयाक्ष मणविकित्सास्तरण । प्रतिक्षमणहुद्धानां हुद्धिमायम् । तेन प्रतिक्षमणेन तेषामिप च किवते हुद्धिः ॥ ५॥ चंरणाविधायणां प्रयाक्ष मणविकित्सास्य हुनः त्यावेषास्य हुनः विवाद हुनः त्यावेषास्य हुनः विवाद हुनः विवाद हुनः विवाद हुनः विवाद हुनः त्यावेषास्य हुनः त्यावेषास्य हुनः विवाद हुनः विवाद हुनः विवाद हुनः विवाद हुनः विवाद हुनः विवाद विवाद हुनः वि
	१ चरणाईयाइयाणं (प्र॰) चरणातियादीनाम् । २ आवश्यकपद्गेन पञ्चाचारशुद्धिः । ३ एतान् पश्यन्ति जिनमातरः ।
	Jain Education International (2)
गा	था ९ - चौद-स्वप्नानाम् नामानि दर्शितानि, अत्र चतुःशरणं वक्तव्यता आरब्धा

	"चतु:शरण" - प्रकीर्णकसूत्र-१ (मूलं+संस्कृतछाया)
(58)	मूलं [१२]
प्रत स्त्रांक १२ दीप अनुक्रम [१२]	मुले दीपरत्नसागरेण संकलितआगमसूत्र - [२४], प्रकीर्णकसूत्र - [०१] "चतुःशरण" मूलं एवं संस्कृतछाया सो जिणभत्तिभरूकः तरोमंचकं जुअकरालो । पहिस्सपणउम्मीसं सीसंमि कपंजली भणह ॥ १२ ॥ रागती सारीणं हंता कम्महुमाइ अरिहंता । विसयकसागरीणं अरिहंता हंतु मे सरणं ॥ १३ ॥ रागसिरिमुवक्किमिसारी हंता । साराणं हुवरं अणुचरित्ता । वेसव्यकसिरिमरिहंता० ॥ १४ ॥ धुइवंदणमरिहंता आरिहंता हिंदपुअमरिहंता । सास्तपसुहमरहंता० ॥ १५ ॥ परमणगरं मृणंता जोईदमहिंद्वा णमरहंता । अम्मकहं अरहंता अरिहंता । सास्तपसुहमरहंता० ॥ १५ ॥ सम्मकहं अरहंता अरिहंता । सास्तपसुहमरहंता० ॥ १५ ॥ अप्रसाद स्वार्थित विद्या । सम्मकहं अरहंता अरिहंता । स्वार्थित अहस्त । विद्या । स्वार्थित सम्मकहं च कहंता अरिहंता० ॥ १८ ॥ एगाइ गिराउणेगे संदेहे देहिणं समं चित्रार्थित अहस्त । अर्हत्तो भगता ने स्वार्थित स्वार्थित । स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित । स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित । स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित । स्वार्थित स्वार्थित । स्वार्थित स्वार्थित सम्बद्धित । स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित । स्वार्थित स्वार्थित । स्वार्थित सम्बद्धित । स्वार्थित । स्वार्थित । स्वार्थित सम्बद्धित । स्वार्थित । स्वार्थित सम्बद्धित । स्वार्थित ।

आगम	"चतुःशरण" - प्रकीर्णकसूत्र-१ (मूलं+संस्कृतछाया)
(58)	मूलं [१९]
प्रत स्त्रांक १९ दीप अनुक्रम [१९]	मूल दीपरत्नसागरेण संकलितआगमसूत्र - [२४], प्रकीर्णकसूत्र - [०१] "चतुःशरण" मूलं एवं संस्कृतछाया १ चडसर गण्डकार्य । ॥ २॥ श्वास्त्र । तिहुपणमणुसासंता अरिहंना०॥ १९॥ वपणामण्ण सुवणं निवाविता गुणेसु ठावंता। जिअलोअ- सुद्धंता अरिहंता०॥ २०॥ अवस्तुपणुणंते निअजसससहरपसाहिअदिअंते। निअपमणाइअणंते पिक- वक्षो सरणामरिहंते॥ २१॥ उविज्ञअजरमरणाणं समन्तः कृत्वस्त्रसस्त स्तरणाणं । तिहुअणजणजणसुह्यणं अरिहंताणं नमो ताणं ॥ २२॥ अरिहंतसरणमलसुद्धिलद्धविद्धद्धित्वद्धवृत्धस्त प्रकृतकाणाणं अपायस्तरहमण्यस्त स्तर्यस्त स्तरस्त स्तर्यस्त स्तर्यस्त स्तरस्तरस्त स्तर्यस्त स्तरस्त स्तरस्तरस्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्तरस्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्त स्तरस्तरस्तरस्तरस्तरस्तरस्तरस्तरस्तरस्तर
f	सेद्ध् शब्दस्य व्याख्या

आगम (२४)	"चतु:शरण" - प्रकीर्णकसूत्र-१ (मूलं+संस्कृतछाया)मूलं [३५] मुनि दीपरत्नसागरेण संकलितआगमसूत्र - [२४], प्रकीर्णकसूत्र - [०१] "चतुःशरण" मूलं एवं संस्कृतछाया
प्रत स्त्रांक 39 दीप अनुक्रम [39]	१ चउसर- णपर्षयं ॥ २॥ विरोहा निषमदोहा पसंत्रुहसोहा। अभिमयगुणसंदोहा हयमोहा साहुणो सरणं॥ ३५॥ संहिअसिगेह- प्रमाण अक्षेमभामा निकामहुहकामा। सुपुरिसमणाभिरामा आयारामा मुणी सरणं॥ ३५॥ मिल्हअविस- प्रक्ताया उजिमययययरपिसंगासुहसाया। अक्रिक्षअहरिसविसाया साहू सरणं गयपमाया॥ ३०॥ हिंहसा- देवें वणचुका कंत्रिमलप्रका (पुण्णा]। अजरामरपर सुद्धा साहू गुणरयणचिका॥ ३०॥ साहुनसु- देवें वणचुका कंत्रिमलप्रका विवि(मु)क्षेपोरिका। पावरयसुर्गरिका साहू गुणरयणचिका॥ ३०॥ साहुनसु- देवें वणचुका कंत्रिमलप्रका विवि(मु)क्षेपोरिका। पावरयसुर्गरिका साहू गुणरयणचिका॥ ३०॥ साहुनसु- देवें वणचुका कंत्रिमलप्रका विवि(मु)क्षेपोरिका। पावरयसुर्गरिका साहू गुणरयणचिका॥ ३०॥ साहुनसु- देवें वणचुका कंत्रिमलप्रका विवि(मु)क्षेपोरिका। पावरयसुर्गरिका साहुगा साहुणो सरणं॥ ४०॥ पवरसुक्ति पत्ते सरणो सरणं काउं पुणोवि जिणधम्मं। पहरिसरोमंचपवंचकंचुअचिअतण् भणदा। ४१॥ पवरसुक्ति पत्ते। सरणं वपनोऽभिराम। आस्मारामा सुनवः शरणम्॥ ३५॥ सुक्वियक्षणा चित्रत्वपुर्शिसङ्गसुस्ताताः। अक्रतिहर्विवादाः साध्वः सरणं गवत्रमाशः। ३०॥ हिंसिहरोषस्त्रचाः इतकारुण्याः स्वयम्भूक्त्रद्वाः। रिक्तपावरवः साध्वः शरणम्॥ ३०॥ स्विपन्नसुम् सुक्वियाः। सिध्वार्यवः स्वयम्भूक्त्रद्वाः। रिक्तपावरवः साध्वः। साधुनसुस्ता यद् आचार्याद्वस्त्रका ते साधवः। साधुभणनेन गृहीतारतसाले साधवः शरणम्॥ ४०॥ प्रतेपन्नसुम् तं केविहिन्नसं साधुनसुस्ता यद् आचार्याद्वस्त्रक्ष कुकाधितततुर्भणिति॥११॥ प्रवरसुक्तैः प्रातं पात्रैरिप एरं कैधिन प्रातम्। तं केविहिनसं साधुनस्ताव्यपभावन्यव्यक्षकुकाधितततुर्भणिति॥११॥ प्रवरसुक्तैः प्रातं पात्रैरिप एरं कैधिन प्रातम्। तं केविहिनसं

"चतुःशरण" - प्रकीर्णकसूत्र-१ (मूलं+संस्कृतछाया)
मूलं [४२]
मृति दीपरत्नसागरेण संकलितआगमसूत्र - [२४], प्रकीर्णकसूत्र - [०१] "चतुःशरण" मृतं एवं संस्कृतखाया पत्तेहिवि नविर केहिवि न पतं । तं केविलिपन्नतं धम्मं सरणं पवन्नोऽहं ॥ ४२ ॥ पत्तेण अपत्तेण च पत्ताणि अ जेण नरसुरसुहाई । मुन्नसमुहं पुण्ण पत्तेण नचिर थम्मो स मे सरणं ॥ ४३ ॥ निहिलिअकलुनकम्मो कयसुन्यमा सरणं मे होउ जिणाममे ॥ ४४ ॥ कालक्तपृत्वि न ममं जम्म जन्म जनस्य जनस्य विद्वारिक्ष स्वसम् । अमर्थ व बहुममं जिणामयं च सर्ण पवन्नोऽहं ॥ ४५ ॥ पसिअकामप्रभोहं गुणसं दिहारिक्ष नक्ति अविरोहं । सिवसुष्ठक्तम्प्रमाने धम्मं सरणं पवन्नोऽहं ॥ ४५ ॥ नरमगङ्गमणरीहं गुणसं दिहारिक्ष निक्ष निवनस्वोहं । निहिलिब दोगवहरं धम्मं जिणदेसिअं वेदे ॥ ४८ ॥ चउत्तरणनामणसंविअसुष्विरअस्पानंविरामं जिल्लास्य स्वस्तरे । मान्यस्य पवन्नोऽहं ॥ ४८ ॥ चउत्तरणनामणसंविअसुष्विरअस्पानंविरामं पत्रोति । कामुक्ष प्रता पत्रोति । कामुक्ष प्रता विराम स्वस्तरे । भणह ॥ ४९ ॥ हहभविअमन्नभविराम सर्वे भण्यस्य पत्रोति । कामुक्ष प्रता पत्रोति विराम सर्वे भण्यस्य । अस्त ॥ अस्त ॥ अस्त । अस्त ॥ अस्त । अस्त ॥ अस्त । अस्त ॥ अस्त । स्वस्त प्रताम सर्वे भण्यस्य । ॥ ४४ ॥ निहनसम्य विराम पत्रोति । विराम पत्रिस्त पत्र । विराम पत्रोति । विराम पत्रिस्त पत्र । विराम पत्रिस्त पत्र । विराम पत्रिस्त पत्र । विराम



आगम	"चतुःशरण" - प्रकीर्णकसूत्र-१ (मूलं+संस्कृतछाया)
(२४)	मूलं [⁹ ९]
प्रत स्त्रांक ७९ दीप अनुक्रम [७९]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलितआगमसूत्र - [२४], प्रकीर्णकसूत्र - [०१] "चतुःशरण" मूलं एवं संस्कृतछाया सहरपरिणामो निर्व चउसरणगमाइ आयरं जीवो । कुसलपयडीउ वंग्रड बद्धाउ सुहाणुवंभाउ ॥ ५२ ॥ मंद्रणुभावाउ कुण्ड ता चेव । असुहाउ निरणुवंभाउ कुण्ड निवाउ मंदाउ ॥ ६० ॥ ता एमं कायं बहेरि निर्वाप संकिलेसिम । होइ निकालं सम्मं असंकिलेसिम सुक्रपफलं ॥ ६१ ॥ चउरंगो जिल्प पम्मो न कओ चउरंगसरणमिव न कयं । चउरंगभवुच्छेओ न कओ हा हारिओ जम्मो ॥ ६२ ॥ इअ—जीवपमायमहारिवीर भईतमेअमफ्झयणं । झाएसु निसंझमवंझकारणं निष्ठुइसुहाणं ॥६३॥ चउसरणं समस्तं ॥१॥ स्था वपमायमहारिवीर यसुकृतम् । काल्य्येऽपि विविधं अनुमोद्यामि तकत्सवंम् ॥५८॥ शुभपिणामो निर्वं चठुःशरणगमनादि आवरर जीवः । कुलल्फ्क्रकृतिविधाति, बद्धाः (अशुभावुक्याः) शुभावुक्याः ॥ मन्दानुभावा (शुभाः) बद्धातिज्ञतुमावाला एव करोति । अशुभा विरनुक्याः करोति तीव्राक्ष मन्दाः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ तद् एतत् कर्तकृत्वं वृवैनिल्यमि सङ्केशे । भवति त्रिकालं सम्यक् अस्वकृत्ये सुकृति सङ्केशे । कुलल्ले स्था अस्व सम्यक् अस्व वृवैनिल्यमि सङ्केशे । भवति त्रिकालं सम्यक् अस्व वृवैनिल्यमि सङ्केशे । स्वति चतुःशररणप्रकीर्णकम् ॥ १॥ । । । । । । । । । । । । । । । । ।
	मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुनः संपादितः (आगमसूत्र २४) "चतुःशरण" परिसमाप्तः

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-लित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

24

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधितः संपादितश्च "चतुःशरण-प्रकीर्णकसूत्र" [मूलं एवं छायाः]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

"चतु:शरण" मूलं एवं संस्कृतछाया:" नामेण

परिसमाप्त:

Remember it's a Net Publications of 'jain_e_library's'